History (1)

B.A. PART II Paper III

Q. अकबर की धार्मिक नीति का विश्लेषण करे।

Ans - अकबर की महानता का एक महत्वपूर्ण कारण उसकी उदार एवं लोकप्रिय धार्मिक नीति भी है। अकबर ने हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच समन्वय कायम करने के उद्देश्य से अपने धार्मिक नीति का प्रतिवाद किया और आगे चलकर दीन-ए-इलाही नामक धर्म की स्थापना की। अकबर स्वयं सुन्नी मुसलमान था। लेकिन उसमें धार्मिक संकिर्णता नही थी। उसने हिन्दुओ और मुसलमान को समान रूप से प्रशासनिक पदों पर नियुक्त किया और सही अर्थ में भारत में राष्ट्रीय राज्य की स्थापना का प्रयास किया। उसने वर्षों के चिंतन के बाद एक नये धर्म की स्थापना की। अकबर पर उनके बातों ने प्रभाव डाला जिससे उसकी धार्मिक सहिष्णुता की नीति का प्रस्फुटन हुआ। अकबर के धार्मिक विचारों पर बैरम खाँ इसके शिक्षक फारस के सूफी संत, अबुल फजल और फौज का काफी गहरा प्रभाव पड़ा। उन संतो के प्रभाव में अकबर ने प्रेम सदभावना और भाई-चारा की नीतियों को अपनाया अकबर के दरबार में बीरबल, टोडरमल, राजा भगवान दास मान सिंह रहते थे। उन्होंने भी अकबर के धार्मिक विचारों को प्रभावित किया।

Scanned with CamScanner

अकबर का विवाह कई हिन्दु कन्याओं से हुआ था। इनका भी अकबर की धार्मिक विचारों पर कम गहरा प्रभाव नहीं पड़ा।

अकबर ने भारत राजनीतिक एकता स्थापित करने के लिए दीन-एला-ही धर्म चलाया। अकबर एक महत्वाकांक्षी मुगल बादसाह था। उसने भारत की राजनीतिक एकता कायम करने के लिए इन नये धर्म का प्रचलन आवश्यक समझा था।

1562 ई० में राजा बिहारीमल की पुत्री जोधाबाई से अकबर का विवाह हुआ। जोधाबाई ने अकबर को हिन्दु धर्म के प्रति सहिष्णु बनाया यह उसके जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना थी 1563 ई० में अकबर ने मथुरा की यात्रा की और हिन्दुओं पर से तीर्थयात्रा कर उठा दिया। 1564 ई० में जजिया कर समाप्त कर दिया। 1575 में अकबर ने सत्य की खोज करने के लिए फतेहपुर सीकरी में इबादत खाना बनवाई। इबादत खाने की स्थापना अकबर के धार्मिक जीवन की दुसरी बड़ी घटना थी। इबादत खाने में सिया, सुन्नी, हिन्दु, बौद्ध, जैन ईसाई विद्वानों का भाषण सुना और इन सभी धर्मों की अच्छी बातों को अपनाकर अकबर ने दीन-एला-ही नामक नये धर्म का प्रचालन किया। जैसा कि लेनपुल ने कहा है :-

The city of fatehpur sikri it self was the offspring of faith.

1579 ई० में अकबर ने फतेहपुर सीकरी के प्रधान उलेमा को पदच्युत कर दिया। और स्वयं अपने नाम से खुतबा पढ़वाया। अकबर ने 1579 में एक मजहरनामा धार्मिक घोषणापत्र प्रकाशित किया, जिस पर अब्दुल नबी गाजी एवं शेख मुबारक आदि उलेमाओं के हस्ताक्षर थे। इन घोषणापत्र के अनुसार अकबर भारत में राजनीति और धर्म दोनों क्षेत्रों में सर्वोपरी हो गया। V.A Smith के अनुसार —

भारत के मुसलमानों ने अकबर को इमान - ए - अद्रिल के रूप में स्वीकार कर लिया। R. Tripathi के विचार है कि " अकबर ने इन घोषणा पत्र के द्वारा सभी वर्गों के लोगों को पूरी धार्मिक स्वतंत्रता दी। "

अकबर ने 1582 ई. में दीन - ए - इलाही धर्म की स्थापना की दीन-ए-इलाही का अर्थ होता है ईश्वरीय धर्म। अकबर ने सभी धर्मों के बीच समन्वय कायम करने के लिए दीन - ए - इलाही की स्थापना की लेकिन वह किसी व्यक्ति को दीन - ए - इलाही स्वीकार करने के लिए किसी प्रकार के दबाव देना नहीं चाहता था।

दीन - ए - इलाही के मुख्य सिद्धांत निम्नलिखित हैं।-

(1) ईश्वर एक है तथा अकबर उसका पैगम्बर व नेता था
(2) सभी सदस्यों को अकबर को साष्टांग प्रणाम करना आवश्यक था।

Scanned with CamScanner

(3) प्रत्येक व्यक्ति अपने जन्म दिवस पर भोज का आयोजन करता था।
(4) इस धर्म के अनुयायियों को मृत्यु के पश्चात् दिये जाने वाली श्राद्ध को भी स्वयं अपने जीवित रहते हुए करना पड़ता था।
(5) इसके अनुयायियों के लिए मांस खाना निषेध था।
(6) इस धर्म के अनुयायी सूर्य व अग्नि की उपासना करते थे।
(7) इस धर्म को रविवार के दिन ही स्वीकार किया जाता था
(8) वृद्ध, गर्भवती, स्त्री अथवा 14 वर्ष के कम आयु की कन्या के साथ सहवास नहीं कर सकते थे।
(9) अनुयायियों को उनकी इच्छानुसार जलाया या दफन किया जा सकता था।
(10) दाढ़ी रखना प्रतिबन्धित था।
(11) दान व उदारता का पालन करना आवश्यक था।
(12) जीवों से विरक्ति व ईश्वर से लगाव।
(13) दीन-ए-इलाही के सदस्य परस्पर मिलने पर 'अल्लाहु-हो-अकबर' कहते थे व उसका जबाब 'जल्ला-जलाल हूँ' से देते थे।

अकबर एक दूरदर्शी शासक था। उसने हिन्दू और मुसलमानों के बीच सदभावना कायम करने के लिए दीन-ए-इलाही का प्रचलन किया।

Scanned with CamScanner

आलोचना — वास्तव में देखा जाए तो यह कोई धर्म था ही नहीं वरन् अनेक धर्मों का मिश्रण था। इसके मानने वालो की संख्या केवल 19 थी। इस धर्म में न कोई पुरोहित था और न कोई मंदिर और न मस्जिद न ही कोई ग्रंथ और न ही इबादत का कोई प्रतीक चिन्ह। इस तरह दीन-ए-इलाही कभी भी जनता में प्रिय न हो सका और न ही राज-धर्म बना। अकबर यदि चाहता तो सम्पूर्ण प्रजा को इस धर्म का अनुयामी बनने के लिए विवश कर सकता था, किन्तु अकबर चाहता था कि लोग स्वेच्छा से ही उसके विचारों को स्वीकार करे। अतः उसने किसी को विवश न किया। अकबर ने अनेक घनिष्ठ लोगों ने भी स्वीकार नहीं किया था। अकबर के घनिष्ठ हिन्दुओं में से भी सिर्फ बीरबल ने ही इसे स्वीकार किया था।

मुगलकालीन व अनेक आधुनिक इतिहासकारों लेखकों व विद्वानों के द्वारा अकबर के दीन-ए-इलाही की कटुआलोचना की गई है। बदायूनी ने विशेष रूप से अकबर की आलोचना की गई है तथा उसके इस्लाम विरोधी कार्यों अकबर की एक लम्बी सूची तैयार की है। आधुनिक इतिहास कारों ने

स्मिथ महोदय ने विशेष रूप से दीन-ए-इलाही की आलोचना की है। जहाँ स्मिथ ने लिखा है कि दीन-ए-इलाही अकबर की मूर्खता का द्योतक था न कि उसकी बुद्धिमता का। यही नहीं उन्होंने लिखा है कि दीन-ए-इलाही वास्तव में लज्जाजनक असफलता थी और यह हिन्दू, मुसलमान तथा ईसाई किसी को भी पसन्द आया।

दीन-ए-इलाही के पतन का पहला कारण अकबर की असीम महत्वाकांक्षी थी। अकबर अपने देश में दीन-ए-इलाही के माध्यम से अपनी सर्वोपरिता कायम करना चाहता था। दीन-ए-इलाही के पतन का दूसरा कारण यह था कि जनता ने इस धर्म को स्वीकार नहीं किया। तीसरे कारण के रूप में हम कट्टरपंथी मुसलमानों को भी उत्तरदायी कहते हैं।

इस प्रकार हम पाते हैं कि अकबर की धार्मिक नीति पूर्णतः धर्म से प्रेरित न होकर मुख्यतः राजनीति से प्रेरित थी। मूलतः वह अपनी इस नीति के द्वारा विभिन्न सम्प्रदायों के अपनी प्रजा में एक सद्भावना तथा समान्वय स्थापित करना चाहता था। और इसी कारण धर्म के आधार पर तो हम इसके धार्मिक नीति को सफल नहीं मानते हैं परंतु राजनीति दृष्टि से एक राष्ट्रीय राज्य स्थापना की दृष्टि से प्रेरक तत्व जरूरी था।

Scanned with CamScanner

अकबर द्वारा स्थापित दीन-ए-इलाही धर्म एक धर्म के रूप में सफल न हो सका। इसका सबसे बड़ा कारण खुद अकबर था, क्योंकि वह खुद भी धर्म के मामले में अकेला नहीं था। जगह-जगह, ऐसा भी मालूम होता है कि वह ईश्वर से अपने लिए मार्गदर्शन की प्रार्थना करता है। इस तरह जब दीन-ए-इलाही की सार्थकता पर ध्यान देते हैं तो वह पूर्णतः प्रतिकूल था. इसी कारण शायद इस धर्म का कब्र भी अकबर के कब्र भी अकबर के कब्र में ही दफन हो गया।

इस प्रकार अकबर की दीन-ए-इलाही मूलतः राष्ट्रीय राज्य की स्थापना के दिशा में एक सफल प्रयास था।

The End

Scanned with CamScanner